

उन्हीं सामान्य तिर्यञ्ज पर्याप्तकोंके आलाप कहनेपर--आदिके पांच गुणस्थान, पर्याप्तसंबन्धी सातों जीवसमास, संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च पर्याप्तकोंके छहों पर्याप्तियां, असंज्ञी पंचेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय तिर्यञ्ज पर्याप्तकोंके पांच पर्याप्तियां, एकेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्तकोंके चार पर्याप्तियां, संज्ञी पंचेन्द्रियोंके दशों प्राण, असंज्ञी पंचेन्द्रियोंके नौ प्राण, चतुरिन्द्रिय जीवोंके आठ प्राण, त्रीन्द्रिय जीवोंके सात प्राण, द्वीन्द्रिय जीवोंके छह प्राण और एकेन्द्रिय जीवोंके चार प्राण होते हैं। चारों संज्ञाएं, तिर्यचगति, एकेन्द्रियादि पांचों जातियां, पृथिवीकायादि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम और देशसंयम ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक;

छण्णाणाणि, दो संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता९ (मु. जुत्ता अणागारु) वा होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणद्वाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाण-छप्पाण-पंचपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादि-आदिपंचजादीओ, पुढविकायादिछक्काया, बे जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, विभंगणाणेण विणा पंच णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील काउलेस्साओ। कि कारणं? जेण तेउ-पम्मलेस्सिया वि देवा तिरिक्खेसुप्पज्जमाणा णियमेण णड्डलेस्सा भवन्ति त्ति। भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं सासणसम्मत्तं खइयसम्मत्तं कदकरणिज्जं पडुच्च वेदगसम्मत्तं एवं चत्तारि सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो,

सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सामान्य अपर्याप्त तिर्यचोंके आलाप कहनेपर--- मिथ्यादृष्टि सासादनसम्यग्दृष्टि और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, अपर्याप्तसंबन्धी सातों जीवसमास, संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तोंके छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञी पंचेन्द्रियों और विकलत्रयोंके पांच अपर्याप्तियां, एकेन्द्रियोंके चार अपर्याप्तियां, संज्ञी पंचेन्द्रियोंके सात प्राण, असंज्ञी पंचेन्द्रियोंके सात प्राण, चतुरिन्द्रियोंके छह प्राण, त्रीन्द्रियोंके पांच प्राण, द्वीन्द्रियोंके चार प्राण और एकेन्द्रिय जीवोंके तीन प्राण होते हैं। चारों संज्ञाएं, तिर्यचगति, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषायें, विभंगावधिज्ञानके बिना पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं होती हैं।

शंका --- सामान्य तिर्यचोंके अपर्याप्तकालमें तीनों अशुभ लेश्याएं ही क्यों होती हैं?

समाधान --- क्योंकि, तेजोलेश्या और पद्मलेश्यावाले भी देव यदि तिर्यचोंमें उत्पन्न होते हैं तो नियमसे उनकी शुभलेश्याएं नष्ट हो जाती हैं, इसलिए तिर्यचोंकी अपर्याप्त अवस्थामें तीन अशुभ लेश्याएं ही होती हैं।

लेश्या आलापके आगे भव्यसिद्धिक अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सासादनसम्यक्त्व, क्षायिकसम्यक्त्व और कृतकृत्यकी अपेक्षा वेदकसम्यक्त्व इस प्रकार चार सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा६१।

नं. ६१ सामान्य तिर्यचोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	ज	प.	प्रा.	सं	ग.	इं	क	यो	व	क	इ	संर	द	ले	भ.	स	संइ	आ.	उ
.	ी.			.	१	.	।.	.	.	.	।।	।.	।.		.
१	४	६८	१०,	४	ति	५	६	१	३	४	.	१	२	२	२	२	२	२	२
मि		।.	७		.			१			३	अस्	८	द्र.	भ.	१	सं.	आ	२
.		६	९,७					म.			अ	।.	।.	६	अ	मि	असं	हा	स
		अ	८,६					४			इ		अ	भा	.	.	.	र	क
		.	७,५					व.			।।		८	.६	भ.			अ	।
		५	६,४					४			.		।.					ना	र
		प.	४,३					अ										हा	अ
		५						।.										र	ना
		अ						२											क
		.						क											र
		४८						।.											
		।.						१											
		४																	
		अ																	
		.																	

संपहि६२ तिरिक्ख-मिच्छाइड्डीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोदस जीवसमासा, छप्पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाण-अट्टपाण-छप्पाण-सत्तपाण-पंचपाण-छप्पाण-चत्तारिपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादि-आदिपंचजादीओ, पुढविकायादिछक्काया, एगारह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो

अब तिर्यच मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, संज्ञी पंचेन्द्रियोंके छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; असंज्ञी पंचेन्द्रियों और विकलत्रयोंके पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, एकेन्द्रियोंके चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; संज्ञी पंचेन्द्रियोंके दश प्राण और सात प्राण, असंज्ञी पंचेन्द्रियोंके नौ प्राण और सात प्राण, द्वीन्द्रियोंके छह प्राण और चार प्राण, एकेन्द्रियोंके चार प्राण और तीन प्राण क्रमशः पर्याप्त और अपर्याप्त अवस्थामें होते हैं। चारों संज्ञाएं, तिर्यचगति, एकेन्द्रिय जाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेग, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे

दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण-णवपाण-अट्ठपाण-सत्तपाण-छप्पाण-चत्तारिपाणा चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादि-आदिपंच-जादीओ, पुढविकायादिछक्काया, णव जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ६३

नं. ६३ सामान्य तिर्यच मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं सामान्य तिर्यच अपर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर--एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, अपर्याप्तसंबन्धी सातों जीवसमास, संज्ञीके छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञी

छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ सत्तपाण-सत्तपाण-छप्पाण-पंचपाण-
चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, एइंदियजादि-आदि-पंचजादीओ,
पुढविकायादिछक्काया, वे जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो
दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया
अभवसिद्धिया, मिच्छंतं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति
अणागारुवजुत्ता वा६४ ।

नं. ६४ सामान्य तिर्यच मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	ज	प		सं	ग.	इं	क	यो	व	क	इ	संर	द.	ले	भ.	स.	संझि	अ	उ
.	ी.	।.	.	.	.	।	।.	।.	।.	.
७	६			१	५	६	२	३				१	२		२	मि	२	२	
१	अ	अ		४	ति		अ		४	२	अर	च	द्र.	भ.	थ्या	सं.	अ	२	
मि	प.	प		.	.		।.			कु	।.	क्षु	२	अ	.	असं	।	२	
.		.					मि			म.		.	क	.	.	.	हा	।	
		५					.			कु		अ	।.				र	।	
		अ					क			श्रु		च	शु				अ	र	
		प					र्म			.		.	.				ना	अ	
		.					.						भा				हा	ना	
		४											३				र	क	
		अ											अ					र	
		प											शु						

तिरिक्ख-सासणसम्माइद्दीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणद्वाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि

और विकलत्रयोंके पांच अपर्याप्तियां, एकेन्द्रियोंके चार अपर्याप्तियां, संज्ञीके सात प्राण, असंज्ञीके सात प्राण, चतुरिन्द्रिय जीवोंके छह प्राण, त्रीन्द्रिय जीवोंके पांच प्राण, द्वीन्द्रिय जीवोंके चार प्राण और एकेन्द्रिय जीवोंके तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यचगति, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषायें, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक,

द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सामान्य तिर्यच पर्याप्त सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

तेसिं चैव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्धाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादि, तसकाओ, वे जोगा,तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो दो दंसणाणि, दब्बेण काउ सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा हौंति अणागारुवजुत्ता वा६७

नं. ६७ सामान्य तिर्यच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	ज	प.	प्रा	सं	ग	इं.	क	या	वे.	क	इ	सं	द.	ले	भ	स	सं	अ	उ
.	ी.	।	।	य	.	.	.	इ	।	.	.
१	१	६	७	४	१	१	१	९	३	४	२	१	२	द्र.	१	१	१	२	२
स	सं	अ			ति	पं	त्र	अ			कु	अ	च	२	भ	स	सं	अ	स
।	.	प			.	चे	स	ी			म	सं	क्षु	क	.	।	.	।	।
	अ				.	.	म				.		.	।	स		हा	क	

.										कु		अ	शु		I.		र	।
										श्रु		च	.				अ	र
										.		.	भा				ना	अ
													.				हा	ना
													३				र	क
													अ					।
													शु					र
													.					

तिरिक्ख सम्मामिच्छाङ्घीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्वाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया,

उन्ही सामान्य तिर्यच अपर्याप्त सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर--- एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग, ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषायें, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्या, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सामान्य तिर्यच सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर--- एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी- पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक,

सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा६८ ।

नं. ६८ सामान्य तिर्यच सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु	ज	प.	प्रा	सं	ग	इं.	क	या	वे.	क	ज्ञा	सं	द.	ले	भ	स	सं	अ	उ
१	१	६	१	४	१	१	१	९	३	४	३	१	२	द्र.	१	१	१	१	२
स	सं		०		ति	पं	त्र	म			ज्ञा	अ	च	६	भ	स	सं	अ	स
म	.				चे	.	स	.			न.	सं	अ	भा	.	म	.	हा	क
।	प.				.	.		४			३			६		।		र	क
								व.			अ								।
								४			इ								र
								अ			।								अ
								।			मि								ना
								१			श्र.								क
																			।
																			र

साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

सामान्य तिर्यच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर--- एक अविरत सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी- पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां और छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और

तेसिं चैव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्धाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोगा, पुरिसवेदो, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दब्बेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा, भवसिद्धिया,

उन्ही सामान्य पर्याप्त तिर्यच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर--- एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषायें, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व; संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्ही सामान्य अपर्याप्त तिर्यच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर--- एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषायें, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन द्रव्यसे कापोत शुक्ल लेश्या, भावसे जघन्य कापोतलेश्या; भव्यसिद्धिक, उपशमसम्यक्त्वके विना क्षायिक और क्षायोपशमिक ये दो सम्यक्त्व होते हैं। पूर्वोक्त दो सम्यक्त्वोंके होनेका यह

उवसमसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्ताणि। मणुसा पुवं बद्ध-तिरिक्खायुगा पच्छा सम्मत्तं घेत्तूण दंसणमोहणीयं खविय खइयसम्माइट्ठी होदूण असंखेज्ज-वस्सायुगेसु तिरिक्खेसु उप्पज्जंति ण अण्णत्थ, तेण भोगभूमि-तिरिक्खेसुप्पज्जमाणं पेक्खिऊण असंजद-सम्माइड्विस्स१ (प्रतिषु 'द्विप्पहुडि' इति पाठः।) अपज्जत्तकाले खइयसम्मत्तं लब्भदि। तत्थेवुप्पज्जमाण कदकरणिज्जं

पडुच्च वेदगसम्मत्तं लब्धदि। एवं तिरिक्ख-असंजदसम्माइडिस्स अपज्जत्तकाले दो सम्मत्ताणि हवंति। सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा७१।

नं . ७१ सामान्य तिर्यच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	ज	प.	प्रा	सं	ग	इं.	क	या	वे.	क	ज्ञा	सं	द.	ले	भ	स	सं	अ	उ
.	ी.	ा.	\	.	.	य	इ	ा.	.	.
१	१	६	७	४	१	१	१	२	१	४	३	१	३	द्र.	१	२	१	२	२
अ	स	अ	अ		ति	पं	त्र	अ	पु.		म	अ	के	२	भ	क्ष	सं	अ	स
वि	.	प.	प.		.	चे	स	ौ.			ति.	सं	द.	क	.	ा.	.	ा	ा
.	अ				.	.	.	मि			श्रु	.	वि	ा.	क्ष	ा	हा	र	क
	.							.			त.		ना	शु	ा	या	र	ा	र
								क			अ		अ	ना	र
								ा			व.			भा	.	.	हा	र	क
								र्म						.	.	.	र	क	ा
								.						क				ा	र
														ा					र

तिरिक्खा संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, संजमासंजमो, तिण्णि

कारण है कि जिन मनुष्योंने सम्यग्दर्शन होनेके पहले तिर्यच आयुको बांध लिया है वे पीछे सम्यक्त्वको ग्रहण कर और दर्शनमोहनीयको क्षपण करके क्षायिकसम्यग्दृष्टि होकर असंख्यात वर्षकी आयुवाले भोगभूमिके तिर्यचोंमें ही उत्पन्न होते हैं, अन्यत्र नहीं। इस कारण भोगभूमिके तिर्यचोंमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंकी अपेक्षासे असंयतसम्यग्दृष्टिके अपर्याप्तकालमें क्षायिकसम्यक्त्व पाया जाता है और उन्हीं भोगभूमिके तिर्यचोंमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंके कृतकृत्यवेदकी अपेक्षा वेदकसम्यक्त्व भी पाया जाता है। इस प्रकार तिर्यच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालमें दो सम्यक्त्व होते हैं। सम्यक्त्व आलापके आगे संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सामान्य तिर्यच संयतासंयत जीवोंके आलाप कहाने पर--- एक देशविरत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं तिर्यचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषायें, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं,

दंसणाणि, दव्वेण छल्लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्ताणि। केण कारणेन? तिरिक्ख संजदासंजदा दंसण मोहणीयं कम्मं ण खवेति, तत्थ जिणानमभावादो। मणुस्सा पुव्वं बद्ध तिरिक्खायुगा खइयसम्माइट्ठिणो कम्मभूमीसु ण उपज्जंति किंतु भोगभूमीसु। भोगभूमीसुप्पणा वि ण संजमासंजमं पडिवज्जंति, तेण तिरिक्ख संजदासंजदट्ठाणे खइयसम्मत्तं णत्थि। सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा७२।

नं. ७२ सामान्य तिर्यच संयतासंयत जीवोंके आलाप.

गु	ज	प.	प्रा	सं	ग	इं.	क	या	वे.	क	ज्ञा	सं	द.	ले	भ	स	स	अ	उ
.	ी.	।	।	।	।	.	.	य	इ	।	

१	१	६	१	४	१	१	१	९.	३	४	३	१	३	द्र.	१	२	१	१	२
दे	सं		०		ति	पं	त्र	म			म	दे	के	६	भ	अ	सं	अ	स
श	.				.	चे	स	४			ति.	श	द.	भा	.	पै	.	ा	ा
.	प.				.	.		व.			श्रु	.	वि	३.	प.	हा		क	
								४			त.		ना	शु	क्ष	र		ा	
								अ			अ		.	.	ा			र	
								पै.			व.			भ	या			अ	
								१						.	.			ना	
																		क	
																		ा	
																		र	

पंचिंदिय तिरिक्खाणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणद्धाणाणि, चत्तारि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ,

भावसे पीत, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्वके विना दो सम्यक्त्व होते हैं। क्षायिकसम्यक्त्वके नहीं होनेका कारण यह है कि संयतासंयत तिर्यच दर्शनमोहनीय कर्मका क्षपन नहीं करते हैं, क्योंकि, वहांपर जिन अर्थात् केवली या श्रुतकेवलीका अभाव है और पूर्वमें तिर्यच आयुको बांधकर पीछे क्षायिकसम्यग्दृष्टि होनेवाले मनुष्य कर्मभूमियोंमें उत्पन्न नहीं होते हैं; किन्तु भोगभूमियोंमें ही उत्पन्न होते हैं। परन्तु भोगभूमियोंमें उत्पन्न होनेवाले तिर्यच संयमासंयमको प्राप्त नहीं होते हैं, इसलिये तिर्यचोंके संयतासंयत गुणस्थानमें क्षायिक सम्यक्त्व नहीं होता है। सम्यक्त्व आलापके आगे संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

७४तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, छ णाणाणि,

तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम और देशसंयम ये दो संयम , आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्ही पंचेन्द्रिय पर्याप्त तिर्यचोंके आलाप कहनेपर--- आदिके पांच गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-पर्याप्त ये दो जीवसमास, संज्ञीके छहों पर्याप्तियां, असंज्ञीके पांच पर्याप्तियां; संज्ञीके दशों प्राण और असंज्ञीके नौ प्राण, चारों सज्ञाएं, तिर्यचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान और आदिकेतीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम और देशसंयम

दो संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिण्णो असण्णिण्णो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ सत्तपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादि, तसकाओ, वे जोगा, तिण्णि वेदा, वेदा, चत्तारि कसाया, पंच णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण, काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं उवसमसम्मत्तं णत्थि, मिच्छत्तं सासणसम्मत्तं खइयसम्मत्तं कदकरणिज्जं पडुच्च वेदगसम्मत्तमिदि चत्तारि सम्मत्ताणि, सण्णिण्णो असण्णिण्णो आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारु-वजुत्ता वा ७५ ।

नं. ७५ पंचेन्द्रिय तिर्यच जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	ज	प.	प्रा	सं	ग	इं.	क	या	वे.	क	ज्ञा	सं	द.	ले	भ	स	सं	अ	उ
.	ी.	ा.	य	.	.	.	ङि	ा	.	.
३	२	६	७	४	१	१	१	२	३	४	५	१	३	द्र	२	४	२	२	२
मि	सं	अ	७		ति	पं	त्र	मि			कु	अ	के	२	अ	मि	सं	अ	स
.	.	.			.	चे	स	.			म.	स	द.	क	.	.	.	ा	ा
स	अ	५			.	.	.	क			कु		वि	ा.	भ	स	अ	हा	क
ा.	प.	”						ा			श्रु.		ना	शु	.	ा.	सं	र	ा
अ	अ							र्म			म		.	.		क्ष	.	अ	र
.	स							.			ति.			भा		ा.		ना	अ
	.										श्रु			.		क्ष		हा	ना
	”										त.			३		ा		र	क
											अ			अ		या			ा
											व.			शु	.	.			र

ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय अपर्याप्त अपर्याप्त तिर्यचोंके आलाप कहनेपर--- मिथ्यादृष्टि, सासादन-सम्यग्दृष्टि और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान; संज्ञी-अपर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण; चारों सज्ञाएं,

तिर्यचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषायें, कुमति कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान इस प्रकार पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक होते हैं। इनके सम्यग्मिथ्यात्व और उपशमसम्यक्त्व नहीं होता है, किन्तु मिथ्यात्व, सासादनसम्यक्त्व, क्षायिकसम्यक्त्व और कृतकृत्यकी अपेक्षा वेदकसम्यक्त्व ये चार सम्यक्त्व होते हैं। संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोप-योगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

पंचिंदियतिरिक्ख मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्धाणं, चत्तारि जीवसमासा, छप्पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो आणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा७६।

नं. ७६ पंचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	ज	प.	प्रा	सं	ग	इं.	क	या	वे.	क	ज्ञा	सं	द.	ले	भ	स	स	अ	उ
.	ी.	।	य	.	.	.	डि	।		
१	४	६	१	४	१	१	१	१	३	४	३	१	२	द्र	२	१	२	२	२
मि	सं	प.	०		ति	पं	त्र	१			अ	अ	च	६	भ	मि	सं	अ	स
.	.	६	७	.	चे	स	म				इ	सं	क्षु	भा	.	.	.	।	।
	प.	अ	९		.	.	.			।।	.	.	.	अ		अ	हा	क	
	सं	.	७				४						अ	६	.	सं	र	।	
	.	५					व.						च			.	अ	र	

अ	प.						४										ना	अ
.	५						अ										हा	ना
अ	अ						१.										र	क
सं	.						२											ा
.							क											र
प.							।.											
अ							१											
सं																		
.																		
अ																		
.																		

तेसिं चेष पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणद्धाणं, दो जीवसमासा, छप्पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दसपाण- णवपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिदियजादि, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि

पंचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त, संज्ञी -अपर्याप्त, असंज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये चार जीवसमास, संज्ञीके छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; असंज्ञीके पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; संज्ञीके दशों प्राण, सात प्राण; असंज्ञीके नौ प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोग ये ग्यारह योग; तीनों वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक,

अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय पर्याप्त तिर्यच मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त, और असंज्ञी-पर्याप्त ये दो जीवसमास, संज्ञीके छहों पर्याप्तियां, असंज्ञीके पांच पर्याप्तियां; संज्ञीके दशों प्राण, असंज्ञीके नौ प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे

अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अबवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा७७।